हर लहजा ब-शक्ल आन

(फ़ारसी सूफी कवि जलालुद्दीन रूमी)

अनुवाद और भावार्थ : जयसिंह
jagpura@yahoo.com

👉 **हर लहजा ब-शक्ल आन Video**

👉 **हर लहजा ब-शक्ल आन Audio**

फ़ारसी सूफी कवि जलालुद्दीन रूमी की कविता "हर लहजा ब-शक्ल आन" को पढ़कर जो अर्थ समझा, उसे अब और विस्तार से साधारण हिंदी में लिख रहा हूँ। यह मेरी समझ है, जो रूमी के सूफी दर्शन और कविता के भावों पर आधारित है। इसे मैं अपने तरीके से विस्तृत कर रहा हूँ ताकि हर हिस्से का मतलब गहराई से स्पष्ट हो जाए।

मेरा समझा हुआ अर्थ

यह रचना फ़ारसी **सूफी कवि जलालुद्दीन रूमी के सूफी दर्शन को दर्शाती है, जहाँ वे ईश्वर या प्रियतम को हर रूप में, हर जगह देखने की बात करते हैं। वे कहते हैं कि प्रिय का दीदार पर्दों के पीछे नहीं, बल्कि आँखों की पुतली में, हर शक्ल में, हर लम्हे में संभव है। यहाँ आत्मा और ईश्वर का एकत्व, उनकी सर्वव्यापकता और प्रेम का वर्णन है। अंत में, रूमी यह भी स्पष्ट करते हैं कि उनकी बातें कुफ्र नहीं, बल्कि सत्य की खोज हैं, और जो इसे नकारे, वही वास्तव में असत्य में है।**

रूमी हमें बताना चाहते हैं कि भगवान, सच्चाई या प्रेम जो भी है, वह हमारे आसपास, हमारे अंदर ही है। उसे ढूंढने के लिए कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं। वह हर शक्ल में, हर पल में हमारे सामने आता है—कभी इंसान बनकर, कभी किसी चीज़ बनकर। सब कुछ उसी से बना है, उसी में खत्म होता है। जो लोग इसे देख लेते हैं, वे सच्चे प्रेमी हैं। और जो नकारते हैं, वे खुद को दुनिया से काट लेते हैं। यह रचना **जिंदगी को प्रेम और एकता से देखने की सीख देती है।**

पहला हिस्सा:

"हमने बेपर्दा तुझे माह-जबीं देख लिया, अब न कर परदा, कि ओ परदा-नशीं को देख लिया..."
मेरे हिसाब से रूमी यहाँ कह रहे हैं कि जो सच्चाई या ईश्वर है, उसे देखने के लिए किसी खास जगह या तरीके की जरूरत नहीं। वह इतना खूबसूरत है जितना चाँद, और मैंने उसे बिना किसी पर्दे के, खुल्लम-खुल्ला देख लिया। "परदा-नशीं" से उनका मतलब है कि लोग सोचते हैं कि भगवान या सच्चाई किसी पर्दे के पीछे छुपी है, लेकिन रूमी कहते हैं कि अब परदा हटाने की जरूरत नहीं, क्योंकि मैंने उसे अपनी आँखों की पुतली में, यानी बहुत करीब से देख लिया।
"सात पर्दों में तुझे परदा-नशीं देख लिया..."
यहाँ "सात पर्दे" शायद दुनिया की मुश्किलों, झूठ या माया की परतों की बात कर रहे हैं। लोग कहते हैं कि भगवान को देखने के लिए इन सब को पार करना पड़ता है, लेकिन मैंने उसे इन्हीं पर्दों के बीच में देख लिया। मतलब, वह हर जगह है, छुपा नहीं।
"हम नज़रबाज़ों से तू छुप न सका, जान-ए-जहाँ..."
मुझे लगता है कि रूमी कह रहे हैं कि जो लोग ढूंढने की चालाकी करते हैं, उनके सामने भी सच्चाई छुप नहीं सकती। "जान-ए-जहाँ" यानी दुनिया की आत्मा—वह हर चीज़ में बसी है। तू जहाँ भी छुपा, मैंने वहीं तुझे पकड़ लिया।
"तेरे दीदार की थी हमको तमन्ना, सो तुझे लोग देखेंगे वहाँ, हमने यहीं देख लिया..."

मैंने समझा कि रूमी कह रहे हैं कि मुझे उस सच्चाई को देखने की बहुत इच्छा थी। लोग उसे कहीं दूर, किसी खास जगह पर ढूंढते हैं, लेकिन मैंने उसे यहीं, अपने पास, अपने अंदर ही देख लिया। यह प्रेम और विश्वास की बात है।

दूसरा हिस्सा:

"हर लम्हा एक शक्ल में वह बुत-ए-अय्यार प्रकट हुआ, दिल ले गया और छुप गया…"
मेरे ख्याल से यहाँ रूमी कहते हैं कि वह सच्चाई हर पल हमारे सामने अलग-अलग रूप में आती है। "बुत-ए-अय्यार" यानी चालाक मूर्ति या प्रियतम—वह ऐसा है जो हर बार नई शक्ल में आता है, हमारा दिल जीत लेता है और फिर गायब हो जाता है। जैसे हर दिन जिंदगी में कुछ नया होता है, और उसमें वही सच्चाई छुपी होती है।
"हर दम एक नए लिबास में वह यार प्रकट हुआ, कभी बूढ़ा, कभी जवान हो गया…"
मुझे लगता है कि रूमी यहाँ बताते हैं कि वह सच्चाई कभी एक बच्चे के रूप में, कभी बूढ़े के रूप में, कभी किसी और शक्ल में आती है। मतलब, वह हर इंसान, हर चीज़ में बदल-बदलकर हमारे सामने आती रहती है। यह दुनिया का खेल है, जिसमें वही एक है।

तीसरा हिस्सा:

"खुद कूजा, खुद कूज़ागर, खुद गिल-ए-कूजा…"
मैंने इसे समझा कि रूमी कह रहे हैं कि जो कुछ भी है—घड़ा (बर्तन), कुम्हार (बनाने वाला), और मिट्टी (जिससे बना)—सब एक ही है। यानी, बनाने वाला, बनने वाली चीज़, और जिससे वह बनी, सब में वही सच्चाई है।
"खुद रिंद-ए-सुबूकश, खुद उस कूजे के सिर पर खरीदार बनकर आया…"
"रिंद-ए-सुबूकश" यानी हल्का शराबी, शायद वह जो मस्ती में डूबा हो। मुझे लगता है कि रूमी कह रहे हैं कि वही मस्ती करता है, वही खरीदने वाला बनता है। और फिर वह टूट जाता है और बह जाता है—यानी सब कुछ वही शुरू करता है, खत्म करता है। यह जिंदगी का चक्कर है, जिसमें सब कुछ एक ही सच्चाई से चलता है।

चौथा हिस्सा:

"नई नई कि यही था जो आता-जाता रहा…"
मेरे हिसाब से रूमी कहते हैं कि हर समय, हर युग में वही सच्चाई अलग-अलग रूप में आती-जाती रही। "नई नई" यानी हर बार नया लगता है, पर असल में वही है।
"तब आखिर में वह अरब-रूप शक्ल प्रकट हुई, और दारा-ए-जहाँ बन गया…"
मुझे लगता है कि यहाँ "अरब-रूप" से रूमी शायद उसकी की बात कर रहे हैं, जो उनके लिए सच्चाई का एक बड़ा रूप थे। वह दुनिया का मालिक बन गया, यानी सच्चाई सब पर छा गई। यह उनके समय और विश्वास का हिस्सा हो सकता है।

आखिरी हिस्सा:

"रूमी न कुफ्र की बात कहता है, न कहेगा…"
मैंने समझा कि रूमी कह रहे हैं कि वे भगवान को नकारने की बात नहीं कर रहे। उनकी बातें सच्चाई और प्रेम की हैं, नास्तिकता की नहीं।
"काफिर वही है जो इनकार लेकर सामने आया, वह मरदूद-ए-जहाँ हो गया…"
मेरे ख्याल से यहाँ रूमी कहते हैं कि जो लोग इस सच्चाई को नहीं मानते, वे ही असल में गलत हैं। वे दुनिया से अलग हो जाते हैं, क्योंकि सच्चाई को नकारना खुद को नकारना है।

———————————-

हर लहजा ब-शक्ल आन
कवि: जलालुद्दीन रूमी
हमने बेपर्दा तुझे माह-जबीं (चाँद-सी सुंदर) देख लिया,
अब न कर परदा, कि ओ परदा-नशीं (पर्दे में रहने वाली) को देख लिया।
हमने देखा तुझे आँखों की सियाह पुतली में,
सात पर्दों में तुझे परदा-नशीं देख लिया।
हम नज़रबाज़ों से तू छुप न सका, जान-ए-जहाँ (जहाँ की जान),
तू जहाँ जाकर छुपा, हमने वहीं देख लिया।
तेरे दीदार की थी हमको तमन्ना, सो तुझे,
लोग देखेंगे वहाँ, हमने यहीं देख लिया।
हर लम्हा एक शक्ल में वह बुत-ए-अय्यार (चालाक प्रियतम) प्रकट हुआ,
दिल ले गया और छुप गया।
हर दम एक नए लिबास में वह यार प्रकट हुआ,
कभी बूढ़ा, कभी जवान हो गया।
खुद कूजा (घड़ा), खुद कूज़ागर (कुम्हार), खुद गिल-ए-कूजा (मिट्टी),
खुद रिंद-ए-सुबूकश (हल्का शराबी),
खुद उस कूजे के सिर पर खरीदार बनकर आया,
टूट गया और बह गया।
नई नई कि यही था जो आता-जाता रहा,
हर क़रन (युग) में देखा उसे,
तब आखिर में वह अरब-रूप शक्ल प्रकट हुई,
और दारा-ए-जहाँ (विश्व का राजा) बन गया।
रूमी न कुफ्र (नास्तिकता) की बात कहता है, न कहेगा,
मुन्किर (इनकार करने वाला) उसका न बने,
काफिर वही है जो इनकार लेकर सामने आया,
वह मरदूद-ए-जहाँ (जहाँ से ठुकराया हुआ) हो गया।